

अमोघ तन्त्रम्



जय महाकाल ।

आशा करते हैं आप स्वस्थ होंगे । हमे कई तन्त्र के जिज्ञासुओं के संदेश आते हैं मन्त्र दीक्षा एवं विद्या प्राप्ति हेतु । प्रयास करेंगे इस लेख से उन विषयों से संबंधित उनकी सभी जिज्ञासाओं एवं नियमों की जानकारी प्राप्त होजाएगी ।

- हम ऑनलाइन अथवा फ़ोन पर दीक्षा प्रदान नहीं करते हैं ना ही किसी प्रकार का मन्त्र अधिकार प्रदान किया जाता है । दीक्षा हेतु मिलना आना आवश्यक है ।
- दीक्षा प्राप्ति के साथ ही एकपल में आपको कोई सिद्धि प्राप्त नहीं होगी । दीक्षा में मिलने वाला गुरु मन्त्र सभी मन्त्रों की कुंजी है , आपको सिद्धि प्राप्त होना पूर्ण रूप से आपकी साधना में परिश्रम , लगन , समर्पण , विश्वास एवं निरंतरता पर निर्भर करती है । एक दिन में आप सिद्ध नहीं बन जाएंगे ।
- दीक्षा प्राप्ति के बाद अगर आप यह समझते हैं कि हम आपके हिसाब से या आपके रुचि अनुसार कुछ सिखाएंगे तो आप गलत है , जो विद्या हमें आपकी योग्यता अनुसार आपके अनुकूल लगेगी या आपके लिए हितकारी होगी वही विद्या सिखाई जाएगी ।
- अधिकतर व्यक्ति इंटरनेट पर कई गुरुओं के पास ऐसा अनुभव लेकर आये होते हैं जहाँ एक निर्धारित धन राशि के बदले दीक्षा मिलती है ।
- जो गुरु धन के लोभ में शिष्य बनाता है या जो शिष्य लोभवश गुरु धारण करता है दोनों ही नार्कगामी होते हैं ।
- दीक्षा नाथ सम्प्रदाय की गुरु परंपरा अनुसार होगी ।
- दीक्षा के पश्चात सम्प्रदाय की परंपरा अनुसार सभी नियमों का पालन करना अनिवार्य है ।
- दीक्षा हेतु आने से पूर्व अपने माता पिता से आज्ञा लेकर आएँ , अगर पूर्व में किसी अन्य गुरु से दीक्षित है तो उनसे आज्ञा लेकर आएँ ।
- आनंद प्राप्ति की मंशा से शराब , गांजा , चरस आदि व्यसन करना प्रतिबंधित है ।
- दीक्षित व्यक्ति सदैव साधु संतो की यथासंभव , यथाशक्ति , यथासामर्थ्य सेवा करेगा कभी जीवनकाल में अनादर नहीं करेगा ।

अमोघ नाथ (स्थापक)
" इंदौर मध्यप्रदेश "

औघड़ पीर गुरु भस्मी नाथ जी
" गादी पीर - बडाला गादी "



अमोघ तन्त्रम्



- कोई जरूरतमंद व्यक्ति आपके द्वार से खाली हाथ न जाएं ।
- परस्त्री / परपुरुष को गलत दृष्टि से नहीं देखना है ।
- गुरु आज्ञा अनुसार ही साधना या क्रिया करेंगे । जितना बताया जाएं केवल उतना ही ना ज्यादा न कम । अन्यथा लाभ हानि के लिए स्वयं उत्तरदायी होंगे ।
- सम्प्रदाय के सभी वरिष्ठ साधु , साधकों का सम्मान करना होगा ।
- किसी भी प्रकार से किसी अन्य व्यक्ति को हानि पहुंचाने हेतु विद्या का उपयोग नहीं करेंगे । मारण वशीकरण अभिचार जैसे कृत्य अनावश्यक रूप से नहीं करेंगे ।
- अपने क्षेत्र में , अपने मित्र मंडल में , अपने परिवार में हमारे सनातन धर्म के प्रति जागृत करने का यथासंभव प्रयास करेंगे ।
- नित्य 1 घंटे का समय अपने साधना में देना होगा ।
- सम्प्रदाय एवं गुरु परंपरा की विद्या की गरिमा एवं गोपनीयता का ध्यान रखना ।
- दीक्षा के समय पर पूजन की वस्तुओं का व्यय शिष्य को भोगना होगा ।
- स्नान करके स्वच्छ बिना सिले हुए वस्त्र पहन कर आये । एक वस्त्र सर ढकने हेतु लेकर आएँ । अपने बैठने के लिए लाल ऊन का आसन अथवा कुश का आसन लेकर आएँ ।
- अपनी कुल परंपरा के अनुसार आचरण रखना होगा ।
- और सबसे महत्वपूर्ण है कुछ ग्रहण करने की इच्छा से अगर आ रहे हैं तो इंटरनेट , यूट्यूब , व्हाट्सएप्प , किताबों आदि से जो जाना है वो सब अपने घर पर छोड़ कर आये । ज्ञान जब तक गुरु मुख से प्राप्त न हो वो ज्ञान नहीं केवल जानकारी है ।
- बस बाकी अपना भजन साधना करो और मौज करो ।

शुभमस्तु
आदेश सिद्धो आदेश

अमोघ नाथ

~ स्थापक ~
अमोघ तन्त्रम्

अमोघ नाथ (स्थापक)
" इंदौर मध्यप्रदेश "

औघड़ पीर गुरु भस्मी नाथ जी
" गादी पीर - बडाला गादी "

संपर्क सूत्र -  @AmoghTantram



+91 7649064116 ; +91 8963912108